आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:14/06/2022; Accepted:16/06/2022; Published:24/06/2022

फीजी के कवि मुहम्मद यूसुफ की काव्य दृष्टि

- डॉ. सुभाषिनी लता कुमार
हिन्दी प्रवक्ता
फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी , फिजी

डॉ. सुभाषिनी लता कुमार, फीजी के कवि मुहम्मद यूसुफ की काव्य दृष्टि, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक2/जून 2022,(88-94)

स्वर्गीय श्री मुहम्मद यूसुफ नांदी, फीजी के सुपरिचित कवियों में से एक हैं। वे फीजी के एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कलम की शक्ति से फीजी के हिंदी काव्य जगत में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। हिंदी के प्रति उनके गहरे समर्पण और सेवा से लोग सदा प्रभावित रहे हैं। वे हिंदी परिषद फीजी के बहुत ही सक्रिय सदस्य थे। फीजी के हिंदी काव्य जगत में उनकी रचनाएँ यहाँ बसे प्रवासी भारतीयों के विचार, जीवन मूल्यों, संवेदनाओं, धर्म और संस्कृति को पाठकों के समक्ष रखने में सफल सिद्ध हुई हैं।

कवि मुहम्मद यूसुफ का जन्म 17 मार्च, 1945 में बाके बतियाका नामक गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम हबीब और माँ का नाम जयतुन है। सन् 1955 में जब उनके पिता को नांदी हवाईअड्डे पर नौकरी मिली तब वे अपने परिवार के साथ बा से माटिन्तार फिर मैंगनिया, नांदी आ बसे। अफसोस की बात है कि 31 जनवरी, 2022 को उनका निधन हो गया और फीजी के साहित्य जगत ने अपना एक चमचमता सितारा खो दिया। मगर अपनी साहित्यिक रचनाएँ और समाज सेवा के माध्यम से वे अमर हैं। आप के लेख, कहानियाँ और कविताएँ उन्नीस सौ सत्तर के दशक में हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र 'जागृति' के माध्यम से और बाद में 'शान्ति दूत' के माध्यम से पढ़ने को मिलती रही। हिंदी की सेवा के लिए स्वर्गीय यूसुफ जी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें 'हिंदी परिषद् फीजी – (पश्चिमी शाखा) द्वारा प्रदान किया गया 'लिविंग लीजेंड अवार्ड' प्रमुख है।

परिवार की आर्थिक समस्याओं की वजह से वे सिर्फ कक्षा सात तक ही स्कूली शिक्षा प्राप्त कर सके और हिंदी की पढ़ाई केवल कक्षा तीन तक नांदी संगम स्कूल से हासिल की। वस्तुतः यूसुफ की स्कूली शिक्षा बहुत कम है मगर उनके पास जीवन का अनुभव अधिक है जो उनकी काव्य कृतियों में परिलक्षित है। शायद इन्हीं कारणों

से उनके द्वारा रचित काव्य साहित्य की विपुलता अपने आप में आश्चर्य का विषय है। उनकी रचनाओं में विषयों की विविधता व आधुनिकतम शिल्प के प्रयोग मिलते हैं। इस संदर्भ में संत कबीरदास की साखी "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥" अति सार्थक प्रतीत होता है। अतः यूसुफ जी के जीवन में किताबी ज्ञान के अलावा व्यवहारिक ज्ञान प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। उन्होंने अपने पिता से जीवन के बहुमूल्य सिद्धान्त जैसे मेहनत और नेकी को अपनाया है। उनका विचार है कि व्यक्ति को अपने काम और ईमान में सच्चा होना चाहिए।

यूसुफ जी की उपस्थिति फीजी में हिंदी भाषा और सांस्कृतिक संबंधित कार्यक्रमों में हमेशा रहती थी, वे इन कार्यक्रमों में काव्य पाठ किया करते थे। ऐसे ही एक कवि सम्मेलन में मेरी उनसे मुलाकात हुई थी। तब से हम कई हिंदी कार्यक्रमों के माध्यम से जुड़ते रहे और एक दूसरे के प्रति हमारी आत्मीयता बढ़ती गई। उनकी काव्य कृतियाँ 'साहेब' नाम से फीजी के साप्ताहिक समाचार पत्र शांति दूत में प्रकाशित होती हैं। यूसुफ ने कई कविताएं लिखी हैं लेकिन प्रकाशन के अभाव और सहयोग की कमी के कारण अभी तक उनकी काव्य किताब का प्रकाशन संभव नहीं हो सका है। मेरे लिए यह सौभाग्य व हर्ष की बात है कि यह उनकी काव्य कृतियों और अध्ययन पर आधारित पुस्तक संपादन का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जब मैं अपने पी-एच.डी. शोध अध्ययन के दौरान फीजी के प्रवासी हिंदी साहित्य एवं रचनाकारों पर अध्ययन कर रही थी तब मेरे मन में यह विचार आया कि मुझे यूसुफ जी की कविताओं का एक संकलन प्रकाशित करना चाहिए ताकि वर्तमान समय में फीजी के प्रवासी हिंदी कविता में क्या लिखा जा रहा है इसका संरक्षण व अध्ययन हो सके और साथ-साथ नई पीढ़ी को इसकी जानकारी दी जा सके। अतः इस संकलन का मूल उद्देश्य यूसुफ जी की काव्यमयी रचनाओं को प्रकाशित करके हिंदी प्रेमियों को युसूफ की सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिलाना था। फीजी में कमला प्रसाद मिश्र, जोगिन्द्र सिंह कंवल, अमरजीत कौर, जैनेन प्रसाद आदि की एक समृद्ध परंपरा रही है। 'मुहम्मद यूसुफ का काव्य: सृजन एवं दृष्टि' काव्य संग्रह उसी परंपरा की एक कड़ी है।

किसी भाव, वस्तु या स्थिति का हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है और उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, वह संवेदना है। यूसुफ की कविता का विषय उनके आसपास के लोगों की ही रंग-रूप, क्रिया कलापों से भरा पड़ा है। उन्होंने जीवन को उसके विविध रूपों में, जटिल संघर्षों को, देश की राजनीतिक विकृतियों को, किसान जीवन की सामान्य दुख-सुख को पहचानने और अभिव्यक्ति का सर्जनात्मक दायित्व अपने कंधों पर उठाया है। आस-पास की घटनाओं का प्रभाव कवि के संवेदनशील हृदय पर अवश्य पड़ता है, जैसे पानी में कंकड़ फेकने से तरंग उठती है वैसे ही रचनाकार जब कुछ देखता-सुनता है, ग्रहण करता है तो इन सबका उस पर प्रभाव पड़ता है और यह प्रभाव उसकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

मुहम्मद यूसुफ एक संवेदनशील कवि थे। उनकी कविताएँ फीजी में बसे भारतवंशियों की वर्तमान जिंदगी से सरोकार रखने वाली कविता है जो समकालीन आधुनिक काव्य की कसौटी पर खरी उतरती हैं। देश, समाज, राजनीति, प्रेम, विरह और व्यंग्य जैसे भावों से जुड़ी इन कविताओं के द्वारा हमें उनके काव्य-लालित्य की झाँकी मिलती है। इस संकलन में कवि के व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ फीजी के सामाजिक एवं राजनीतिक परिवेश पर आधारित रचनाएं प्रस्तुत हैं। अपने जीवन की सम्पूर्ण यात्रा को यूसुफ जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से हमारे सामने रख दिया है।

फीजी की राजनीतिक परिस्थितियों का प्रभाव यूसुफ की कविताओं में विद्यमान है। उनकी कविताओं का बड़ा अंश देश की राजनीतिक स्थिति पर आधारित है। ब्रिटेन से आजादी के बाद से अब तक फीजी में चार तख्तापलट हो चुके हैं : दो 1987 में, एक 2000 में, और 2006 के अंत में जिसके कारण फीजी के प्रवासी भारतीयों के लिए फीजी की राजनीतिक स्थिति ब्रिटिश शासन के दौर से और भी बदतर हो गई। राजनीतिक अस्थिरता के कारण समाज में बढ़ती असुरक्षा, भय और जातीय भेद-भाव की वजह से कवि प्रवासी भारतीयों की स्थिति को लेकर अधिक निराशाजनक है। फिर भी कवि राष्ट्र हित की भावनाओं से ओत-प्रोत है। 'तुझे छोड़ के हम कही नहीं जाएंगे' कविता में कवि के राष्ट्र प्रेम का सुन्दर चित्र अंकित है-

आए मेरे वतन फीजी

तुझे छोड़ के हम कही नहीं जाएंगे

यही रहेगे हम तेरे पास

तुझे दुनिया का स्वर्ग बनाएंगे

दुनिया के नक्शे पर तू छोटा सा एक सितारा है

नाज़ है हमको कि तू प्यारा फीजी देश हमारा है

नेताओं में मूल्यों और मर्यादा की कमी, कवि के संवेदनशील हृदय में काँटे की भाँति चुभता है। स्वार्थी नेताओं के कारण भोली-भाली जनता अनाचार की आग में जल रही है। ऐसे माहौल में कवि को दिवाली जो हर्षोल्लास का त्योहार है वह भी मातम सा लगता है। *'कोई दिवाली कैसे मनाए?'* कविता की पंक्तियों में कवि देश में हुए राजनीतिक परिवर्तन के विषय में लिखते हैं। यूसुफ जी अपनी कविताओं द्वारा पूरे समाज के मन की गाँठ खोलकर रख देते हैं। समाज में गरीबों पर अन्याय, जातीय भेद-भाव, स्त्री शोषण, नेताओं का स्वार्थ आदि बढ़ रहा हो तो चिंतित होकर कवि प्रश्न करता है कि वहाँ के लोग दिवाली कैसे मना सकते हैं। इस प्रकार कवि यूसुफ की अन्य रचनाएं भी राजनीतिक परिवर्तन, लोकतंत्र, देश-प्रेम आदि विचारों को पाठकों के समक्ष कलात्मक रूप से रखती हैं।

हालांकि चुनाव के बाद लोकतांत्रिक सरकार के सत्ता में आ जाने से कवि को न्याय का एहसास होता है और प्रजातांत्रिक सरकार के लिए उसका आशावादी स्वर उभरकर सामने आता है-

नया संविधान मिला तो जातियता की दीवार टूट गई
एक नाम मिला 'फीजियन' सभी को
अब खुशी-खुशी दिवाली मनाओ।
जो मुसीबत सह लिया हमने अब उसे भूलकर 'साहेब'
मिलकर बईनिमरामा के साथ देश को अब आगे बढ़ाओ।

कवि अपनी कविता में *बईनिमरामा* (फीजी का वर्तमान प्रधान मंत्री) सरकार का गुणगान करते हैं। वह 'जिनके दिल में दूसरों की...' कविता में फीजी फेर्स्ट पार्टी, फीजी के प्रधानमंत्री आदरणीय बईनिमरामा सरकार को सत्ता में आने के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। 'जिनके दिल में दूसरों की...' कविता की पंक्तियाँ दृष्टिगोचर है-

धन्य है बईनिमरामा
जिसने 'फीजी फेर्स्ट पार्टी' की शुरुआत की
आपके कामों से रब ने भी
आपका रुतबा बुलन्द किया
वतन के लोगों पर
आपका बहुत बड़ा एहसान है।
हमने फकत आपके सिर पर
जीत का सेहरा रखा है
अल्लाह ने तो आपके सिर पर
इज्ज़त का ताज रखा है
इसीलिए आपको दुवायें देता
आज वतन का हर इन्सान है।

उक्त कविता में कवि प्रसन्न है कि प्रधानमंत्री फ्रैंक बैनिमारामा की सरकार फीजी राष्ट्र की सेवा और देश की उन्नति के लिए समर्पित है। यह सरकार प्राथमिक से लेकर 13वीं तक के बच्चों के लिए मुफ्त में शिक्षा प्रदान कर रही है। तथा इस सरकार ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने, जातीय भेदभाव मिटाने और नागरिकों में सामाजिक समानता हासिल करने की पहल की है जिसके परिणामस्वरूप फीजी के सभी नागरिकों को 'फीजियन' कह कर संबोधित किया गया है। फीजी के प्रधान मंत्री और फीजी फर्स्ट पार्टी फीजी को ऐसी जगह पहुँचाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं जहाँ निरंतर विकास हो और साथ ही देश में सामाजिक एकता को समृद्धि मिले। उपर्युक्त

काव्यांशों को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि के लिए लोकतंत्र, राजनीतिक परिवर्तन, राष्ट्र का विकास बहुत महत्वपूर्ण है।

किसी भी युग और किसी भी साहित्यकार की रचना अपने समय के सामाजिक यथार्थ से अप्रभावित नहीं रह सकती। इसी तरह यूसुफ की कविता किसी न किसी सामाजिक संदर्भ से जुड़ी है। 'क्यूँ मैं हिन्दू और तू मुसलमान?' में वह पाठकों से प्रश्न करता है कि समाज में लोग क्यों जातीय आधार पर भेद-भाव करते हैं। कवि जात-पात के भेद-भाव को नहीं मानते हैं। उनके लिए राम और रहीम एक है। वे राष्ट्रीय एकता में विश्वास करते हैं। 'क्यूँ मैं हिन्दू और तू मुसलमान?' की पंक्तियाँ प्रस्तुत है-

हिन्दू-मुसलमान में बँट कर हम टुकड़ों में बिखर जाएंगे,
अगर कोई बड़ी मुसीबत आई हम पर तो किधर जाएंगे?
मदद करने पड़ोसी पहले आएगा चाहे हिन्दू हो या मुसलमान
जात-पात हमने बनाया रब ने बनाया था सिर्फ इन्सान।

फीजी एक बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक देश है जहाँ ईसाई, हिंदू, मुस्लिम, सिख धर्म के लोगों में भाईचारे और जातीय एकता की भावना अति आवश्यक है। देश में सुख-शांति का वातावरण बनाए रखने के लिए सभी को मिलजुल कर रहते हुए रंग भेद, धर्म और जातीय भेद-भाव को भूलकर एकता के सूत्र में बंधकर जीवन व्यतीत करना हैं। 'आओ हम सब मिलकर ऐसा दीप जलाएँ' कृति भी सामाजिक एकता पर आधारित है। यूसुफ ने रंग-भेद पर भी 'काला मत बनना!', 'भगवान करिस अन्याय!', जैसी कविताओं में अपनी प्रतिक्रिया दी है।

आज संसार के हर कोने में मनुष्य आर्थिक कमी के कारण महँगाई की ज्वाला में जल रहा है। कवि महँगाई की समस्या पर 'खाव ऊबी-डालो!' कविता में लिखते हैं-

डालो-ऊबी खाय के, करो जीवन निर्वाह,
ई महंगाई से यारो, जनता भई तबाह,
जनता भई तबाह, टेक्स सब भर-भर के,
डोलर के कीमत घटा, जिये अमीर सब कचर के,
कह 'साहेब' कविराय, बकड़ी और मुर्गी पालो,
बासी खाव रोटी, खाव अब ऊबी-डालो!

उक्त कविता में कवि जनता को महँगाई से लड़ने का सुझाव देते हैं। महँगाई का सामना करने के लिए लोगों को आत्मनिर्भर होना पड़ेगा और घर पर शाक-सब्जी उगाकर खानी चाहिए। कुछ लोगों के पास नौकरी नहीं है, कुछ के पास कम वेतन है, तो वहीं कई किसानों को उनके फसल के लिए सही दाम नहीं मिल रहे हैं जिसकी वजह से व्यक्ति को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक तरफ कम वेतन है और दूसरी ओर बढ़ती महँगाई है। आम आदमी के इन संघर्षों से कवि अज्ञान नहीं है। वह उनके दुख को महसूस करता है और अपनी कविताओं में अभिव्यंजित करता है। उदाहरण के लिए 'क्या ये कयामत की निशानी है...?' का उदाहरण देखिए-

सुना है कुछ घरों के अन्दर भी पानी है,
लोग बैठे हैं छतों पर अपने घर के,
बिलख-बिलख कर रो रहे हैं छोटे बच्चे,
बुरा हाल हो रहा है उन का मारे डर के
देख कर सब कुछ घबराता है मेरा दिल,
सोचता हूँ क्या ये कयामत की निशानी है?

इसके अतिरिक्त समाज में मानवीय मूल्यों की कमी है और नई पीढ़ी की निगाह में शायद रिश्ते ज्यादा मायने नहीं रखते हैं की ओर कवि संकेत करता है। जिस तरह महानगरों में पड़ोसी एक-दूसरे को जानते तक नहीं हैं, अंजान की तरह रहते हैं। किसी के पास किसी के लिए समय नहीं है। कोई अनहोनी हो जाए तो किसी का साथ या सहयोग मिल पाएगा, इसका भरोसा भी नहीं किया जा सकता है। सब कुछ पा लेने पर भी आदमी अपने को अकेला पाता है। कहीं भी वास्तविक खुशी नहीं दिखाई देती है। हर कोई असंतुष्ट दिखता है, व्यवस्था से, समाज से, मित्रों-परिचितों से और अपने आप से। कवि ने 'सब कुछ नकली!' में समाज में आत्मीयता की कमी को दर्शाया है। इसके साथ उन्होंने आम आदमी के दर्द को अपनी कविता का विषय बनाया है।

'स्वीट है मोर्डन नेन्सी', 'अच्छी लड़की-नये ज़माने की', 'अच्छी लड़की- नये जमाने की', 'मोर्डन बन जा यार', 'नाइट क्लब की शान!' आदि कृतियों में कवि ने समाज में बढ़ते आधुनिक आकर्षण की चर्चा की है। आधुनिकता की चकाचौंध में लोग अपनी संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को दरकिनार करते जा रहे हैं जिस कारण सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया हम अपने कपड़े, रहन-सहन, भोजन इत्यादि में देख सकते हैं।

लेखक जिस वातावरण में रहता है, उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अगर वह लोगों की समस्याओं से अलग रहकर, उन्हें नजरअंदाज करके अपनी निजी जिंदगी की उलझणों के बारे में लिखे तो वह स्वार्थी होगा। कवि यूसुफ की काव्य रचनाएं उनके आस-पास के लोगों से अलग नहीं है, यह उनके दुख दर्द से परे नहीं है, बल्कि उनकी तकलीफों और समस्याओं का प्रभावशाली अंकन उनकी साहित्यिक रचनाओं का अहम हिस्सा है। अतः कवि यूसुफ की कविताओं के द्वारा फीजी के प्रवासी हिंदी साहित्य में व्याप्त सामाजिक चेतना वहाँ के व्यक्तियों, परिवारों, वर्गों आदि की दशा एवं मनोवृति दृष्टिगोचर होती है।

संदर्भ :

1. सुभाषिनी लता कुमार (सं). 2021. मुहम्मद यूसुफ का काव्य: सृजन एवं दृष्टि, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली।
2. जोगिन्द्र सिंह कंवल.2004.फीजी का हिंदी काव्य साहित्य. भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् .नई दिल्ली.

****